Cotton Textile Industry:

ब्रिटेन मे औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात वस्त्र-उद्योग से ही हुआ।

सूती-वस्त्र उद्योग का विकास 1780 ई० मे ही मैनचेस्टर के आस-पास से प्रारम्भ हुआ। उस समय उद्योग अत्यन्त छोटे पैमाने पर चल रहा था, तथा केवल स्थानीय मॉंग की ही पूर्ति करता था।

18वी शताब्दी के आरम्भ मे ब्रिटिश सूती-वस्त्र उद्योग का उत्पादन प्रायः नगण्य था। 18वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे ब्रिटेन मे सूती वस्त्र-उद्योग से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के आविष्कार हुए जिन्होने इसकी काया पलट दी।

1733 ई० मे जॉन के द्वारा फ्लाईंग शटल का अविष्कार प्रमुख है। बुनाई के कार्यों मे सुविधा हुई। पहले इसका प्रयोग ऊन उद्योग मे किया जाता था, किन्तु 1760 ई० सूती-वस्त्र उद्योग मे भी यह प्रयुक्त किया जाने लगा।

सूती-वस्त्र उद्योग की प्रमुख समस्या कताई के सम्बन्ध मे रह गयी। अठारहवी शताब्दी के मध्य मे इस पर भी ध्यान दिए जाने लगा।

1769 मे रिचार्ड आर्कराइट ने एक कातने की मशीन का अविष्कार किया जो सर्वथा नवीन सिद्धांतो पर आधारित थी।

सन 1780 से 1803 के बीच सूती वस्त्र-व्यवसाय मे छपाई एवं रंगाई के क्षेत्र मे भी बहुत-सारे सुधार हुए।
1783 ई० तक कपड़े की छपाई हाथ से होती थी जिसमे श्रम, शक्ति एवं धन का अत्यधिक अपव्यय होता था।
1783 मे थॉमस बैल ने ताँबे के सिलिंडर से छापने का आविष्कार किया।
उन्नीसवीं शताब्दी मे ब्रिटेन का सूती वस्त्र-उद्योग अपने चरमोत्कर्ष पर था। शताब्दी के प्रथम साठ वर्षों मे इस उद्योग का अबाध गति से विकास हुआ।
सर्वप्रथम तो इस शताब्दी मे भी इस उद्योग से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की मशीनों का आविष्कार हुआ जिससे धीरे-धीरे वस्त्र-उद्योग की प्राय: प्रत्येक क्रिया मे आधुनिक मशीनों का प्रयोग किया जाने लगा।
1860-65 ई० के बीच अमेरिकन गृह-युद्ध से इस उद्योग को भारी धक्का लगा। गृह-युद्ध के कारण अमेरिका से कपास मिलना प्राय: बिलकुल बन्द हो गया था।
बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ मे ब्रिटेन सूती वस्त्र का सबसे बड़ा उत्पादक तथा निर्यातक देश था। 1914 ई० मे इस उद्योग मे 590 लाख तकुए तथा 8.05,000 करघे थे।
यह प्रति वर्ष 200 करोड़ पौंड का कपास का उपयोग करता था तथा इसमे 620 हजार मजदूर कार्य करते थे।

Scanned with CamScanner

प्रथम विश्व-युद्ध एवं बाद में सूती-वस्त्र उद्योग :→

प्रथम विश्व-युद्ध से इस उद्योग को बड़ी क्षति पहुँची। युद्ध काल में कई कारणों से इस उद्योग को कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। सर्वप्रथम कपास के आयात तथा सूती वस्त्र के निर्यात सम्बन्धी कठिनाई थी।
ब्रिटेन का यह उद्योग बड़े ही निर्बल आधार पर आधारित था। कपास की पूर्ति तथा सूती वस्त्र के बाजार दोनों के लिए यह मुख्य रूप से विदेशों का आश्रित था। युद्ध काल में जहाज की कमी के कारण इस उद्योग को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

1929 ई० की विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी से तो इस उद्योग को आधारभूत धक्का पहुँचा तथा उत्पादन में बहुत कमी हुई।
1924 ई० की अपेक्षा 1930 ई० में उत्पादन में 50 प्रतिशत कमी हो गई।

प्रथम-युद्ध तथा विश्व-व्यापी आर्थिक मन्दी का इस उद्योग पर बड़ा ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
इस उद्योग की बिगड़ती हुई स्थिति को रोकने के लिए 1936 में एक सूती वस्त्र-उद्योग पुनर्संगठन अधिनियम पारित किया गया।
1939 ई० में एक को भी नियुक्ति की गयी।

ब्रिटेन के सूती-वस्त्र उद्योग की वर्तमान समस्याएँ :-

ब्रिटेन के सूती वस्त्र-उद्योग के समक्ष इस समय विभिन्न समस्याएँ हैं जिसमें निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं =

1. निर्यात बढ़ाने की समस्या :→ ब्रिटेन का सूती-वस्त्र उद्योग निर्यात पर ही आधारित है। इसके निर्यात मे निरन्तर कमी होने लगी।
प्रधान कारण भारत जो पहले इसका एक प्रधान बाजार था, सूती-वस्त्र उद्योग का द्रुतगति से विकास है।
राष्ट्रमंडल के देशों मे भी सूती-वस्त्र इंगलैंड के घरेलु बाजार मे आने लगे हैं जिनकी प्रतियोगिता का इसे सामना करना पड़ता है।

2. यन्त्रों के आधुनिकीकरण की समस्या :→ ब्रिटिश सूती वस्त्र-उद्योग के अधिकांश कारखानों के यन्त्र अत्यन्त प्राचीन तरीके के हैं। आधुनिकीकरण अनिवार्य है, अन्यथा यह उद्योग विदेशी प्रतियोगिता का प्रभावपूर्ण तरीके से सामना नहीं कर सकता।

3. सम्मेलन आन्दोलन के उचित तरीके से विकास की समस्या :→ ब्रिटिश सूती-वस्त्र-उद्योग का संगठन पहले क्षितीजीय आधार पर हुआ था जिससे इसे विशेष रूप से कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
इसके लिए विशेष रूप मे प्रयास किया जा रहा है।

Scanned with CamScanner

एकीकरण के उद्देश्य से सन 1955 ई० में United Kingdom monopolies and restrictive practices commission ने सूती - वस्त्र उद्योग के लिए एक 6 सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो इस प्रकार है—

(क) विक्रेताओं द्वारा सामूहिक विवेकपूर्ण निर्णय एवं मूल्य निर्धारण,

(ख) विक्रेताओं द्वारा सामूहिक विवेकपूर्ण क्रय.

(ग) सामूहिक रूप से विक्रय की दशाओं का निर्माण

(घ) दशाओं को सामूहिक रूप से लागू करना,

च) क्रेताओं का सामूहिक विवेकपूर्ण निर्णय, तथा

(छ) सामूहिक रिबेट

प्रधान उद्देश्य एकीकरण की व्यवस्था का आश्रय लेकर सूती - वस्त्र उद्योग के संकट को दूर करना है।

4. <u>उत्पादन व्यय को कम करने की समस्या</u> :—

सूती वस्त्र - उद्योग की एक प्रधान समस्या यह है कि कपड़े तथा सूत का उत्पादन व्यय अधिक होने के कारण यह महंगा पड़ता है जिससे विदेशी बाजार में प्रतियोगिता करने में इसे कठिनाईयो का सामना करना पड़ता है।

उत्पादन - व्यय को कम करने के लिए भी विभिन्न प्रकार के प्रयत्नो की आवश्यकता पड़ती है।

वर्तमान स्थिति : → कृत्रिम रेशो तथा रेयन का प्रयोग ब्रिटेन के वस्त्र - उद्योग

Scanned with CamScanner

में बहुत बढ़ रहा है। वर्तमान समय में, सूती वस्त्र - उद्योग की 57 प्रतिशत इकाइयाँ पूर्णतः सूती धागे एवं सूती वस्त्रों का उत्पादन करती है, 51 प्रतिशत मिश्रित वस्त्रों का उत्पादन करती है तथा 12 प्रतिशत पूर्णरूप से कृत्रिम रेशों के वस्त्र बनाने में संलग्न है। ऐसा जान पड़ता है कि निकट भविष्य में सूती - वस्त्र - उद्योग पूर्णतया कृत्रिम रेशों का उद्योग हो जाएगा।

1985 ई० में ब्रिटेन के वस्त्र उद्योग में लगभग 5 लाख मजदूर कार्य करते थे। आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रिका, न्यूजीलैंड, रूस समय इसके प्रमुख ग्राहक है।

1980 ई० में देश के कुल औद्योगिक उत्पादन का 8 प्रतिशत वस्त्र उद्योग का था।

Scanned with CamScanner